ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-4* July-2020
Anthology : The Research

इन्दुबाली के उपन्यास 'बाँसुरियां बज उठी' में नारी का यौन शोषण

Sexual Abuse of Woman in Indubali Novel 'Bansuriyaan Bajjhi'

गुरमेल सिंह
शोधार्थी (पी.एचडी)
हिन्दी विभाग,
गुरू काशी विश्वविद्यालय
तलवंडी साबो (बठिण्डा)
पंजाब, भारत

ज्ञानी देवी गुप्ता
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
गुरू काशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो (बठिण्डा)
पंजाब, भारत

सारांश

इन्दुबाली स्वतन्त्रता से पहले 1932 ई. में जन्में, जिन्होनें अपने लंबे तजुर्बे से निष्कर्श निकाला कि नारी विमर्श की जरूरत समाज में समन्वय लाने के लिए अति अवश्यक है। उनके कथा साहित्य का मुख्य विषय नारी विमर्श रहा है जिसमें नारी का शारीरिक, राजनैतिक, समाजिक अथवा आर्थिक शोषण इत्यादि जैसी त्रासदियों को रेखांकित किया गया है। इन्दुबाली के उपन्यास 'बाँसुरियां बज उठी' में दिखाया गया है कि नारी चाहे जिस समाज में हो उसका शोषण अवश्य होता रहा है। यही उनके उपन्यास में भी घटता है। यहां नारी का यौन शोषण होता है, इस हद तक होता है कि देह व्यापार तक की स्थिति तक का सामना करना पड़ता है लेकिन नारी का यौन शोषण के विरूद्ध अपनी प्रतिक्रिया करना और अंतः नारी का स्वतन्त्र अवस्था में पहुंचने पर आलौकिक आनन्द की प्राप्ति को बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

Born in 1932 AD before Indubali independence, who came to the conclusion from her long experience that the need for female discourse is absolutely necessary to bring co-ordination in the society. The main topic of her fiction has been women's discourse, in which tragedies such as physical, political, social or economic exploitation of women have been highlighted. Indubali's novel 'Bansuriyaan Bajjhi' shows that the woman must be exploited in any society. The same happens in his novel. Here the woman is sexually abused, to the extent that the body has to face up to the status of a business, but the woman reacts against the sexual exploitation and the woman achieves supernatural joy when the inner woman reaches her independent state. Presented psychologically.

मुख्य शब्द : इन्दुबाली 'बाँसुरियां बज उठी', आलोचना।
Indubali 'Flutes Ringed', Criticism.

प्रस्तावना

प्राचीन काल में ऋग्वैदिक काल के बाद उत्तर वैदिक काल में नारी–पुरूष भेदभाव दिखाई देने लगा। ऋग्वैदिक काल में जहाँ नारी को पुरूष के समान अधिकार प्राप्त थे और दोनो नर–नारी का दायित्व समाज के प्रति बराबर था। ऋग्वैदिक काल से बहुत सारी विदुषी जैसे अपला, घोषा, विश्वारा इत्यादि ने साहित्य एवं समाज में अपना विशेष योगदान डाला। लेकिन उत्तर वैदिक काल महाजनपद काल से नारी की दुर्दशा की शुरूआत हुई। रामचरित मानस में तो तुलसी दास नारी के विरूद्ध बहुत बड़ी बात कह गये। उदाहरण–

ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी
सकल ताड़न के अधिकारी
(सुंदरकाड, रामचरित मानस)

ऐतरय एवं तेतरय बाह्मण ग्रंथों के इलावा बहुत से ऐसे ग्रंथ थे जिनमें नारी की निंदा की गई। वहीं से नारी का न केवल सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक तृस्कार हुआ बल्कि यौन शोषण की परम्परा भी शुरू हुई। धीरे–धीरे समाज की धारा आधुनिकता की और बढ़ी जहाँ कुछ नयें धर्मों और अंदोलनकारियों ने नारी सम्मान तथा यौन शोषण के प्रति अपने प्रतिक्रिया दी तथा समाज को नारी का महत्व समझाया। पूरी दुनिया में ऐसे अंदोलन चले जिससे नारी को भोग विलास की वस्तु समझे जाने पर आपत्ति जताई गई।

इन्दुबाली ने दूसरे नारीवादी लेखकों की भांति नारी विमर्श को अपना मुख्य विषय बनाया है। यहां उनके उपन्यास में यौन शोषण को रेखांकित करके उपन्यास के नारी पात्रों की भूमिका को वर्णित कर रहे हैं जिसमें इन्दुबाली दिखाती है कि उसके पात्र अपनी भीषण परिस्थितियों में भी अपने धैर्य को बनाये रखते हैं और साकारात्मक अभिवृति के साथ यौन शोषण के विरूद्ध सफलता प्राप्त कर आत्म अनुभूति प्राप्त करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध कार्य का उद्देश्य नारी विमर्श के विविध आयामों में इन्दुबाली के उपन्यास 'बाँसुरियां बज उठी' में नारी का यौन शोषण है उससे उत्पन्न अंतः मानसिक पीड़ा और सामाजिक अवहेलना का सामना करके अधिकार प्राप्ति और सफलता प्राप्त करना नारी के पुरूष प्रधान समाज में सक्षम दिखाने का उद्देश्य है।

भारत जैसे राष्ट्र पर जहाँ बहुत सारे आक्रमणकारियों की वजह से यहां हिन्दु, मुस्लिम, बौध, जैन, पारसी तथा सिक्ख समुदायों के लोग रहने लगे तो यहां पर जाति, धर्म तथा नारी भेद और बढ़ने लगा। जिससे धर्म तथा राजनीति की आड़ में नारी का यौण शोषण बढ़ने लगा। नारी के यौन शोषण का उदाहरण धर्म ग्रंथो में भी अंकित है। निम्नलिखित कबीर का दोहा इस बात का साक्षात कराता है।

गये रोय हंसि खेलि के
हरत सबों के प्राण
कहै कबीर या घात को
समझे संत सुजान

(अर्थात् नारी गा कर, रो कर, हंस कर या खेल कर सब के प्राण हर लेती है नारी का आघात या चोट केवल संत और ज्ञानी ही समझ पाते हैं)।

यहां प्रतिदिन हिन्दु नारियों के साथ सामूहिक बलात्कार तथा जबरदस्ती विवाह करना सामान्य बात रही। बदले की भावना से हिन्दू, सिक्ख तथा अन्य समुदायों के लोग मुस्लिम नारियों से शादियाँ रचाने लगे जिससे नारी का यौण शोषण और बढ़ने लगा। यही कारण था कि हिन्दुओं तथा मुस्लिम नारियों में प्रदा प्रथा तथा सत्ती प्रथा की शुरूआत हुई।

लेकिन भारत में अंग्रेजों के शासन के दौरान राजा राम मोहन राय ने 1829 ई. में सत्ती प्रथा का अंत करने के लिए कानून बनवाया तथा 1856 ई. में ईश्वर चन्द्र विद्या सागर ने विधवा पुनः विवाह का कानून पास करवाया। इस तरह नारी के समाजिक तथा यौण शोषण पर बहुत अच्छे स्तर पर अंकुश लगा। लेकिन इसको पूर्ण रूप से नहीं रोका जा सका।

यौन शोषण पर बहुत से साहित्यकारों जिनमें बहुत सी स्त्री साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं से यौण शोषण के विरूध आवाज़ उठाई। इनमें मुंशी प्रेमचन्द, जैनेंन्द्र, मोहन राकेश, प्रभा खेतान, मृदिला गर्ग, ऊषा प्रियवदा, महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, ममता कालिया इत्यादि ने अपनी रचनाओं में जहाँ नारी विमर्श किया वहीं घरेलू हिंसा और यौण शोषण को अपनी रचनाओं का मुख्य विषय बनाया तांकि नारी सुधार किया जा सके।

यहां पर एक नाम और आता है वो है इन्दुबाली का। वह पंजाब जैसे गैर हिन्दी क्षेत्र में रहते हुए भी हिन्दी साहित्य में अपनी कहानियों, उपन्यासों तथा आलोचना ग्रंथ के द्वारा हिन्दी साहित्य में योगदान डाल चुकी है। उनकी कहानियों का विषय केवल और केवल नारी विमर्श है। उसकी रचनाओं का विषय नारी को अधिकार दिलवाना है। उसके नारी पात्र पुरूष को नीचा दिखाने की बजाय अपनी अधिकार प्राप्ति की कोशिश करते हैं। 'बाँसुरियां बज उठी' उपन्यास उनकी एक विशेष हस्त लिखित रचना है जिसमें सभी नारी पात्र अधिकार प्राप्ति की कोशिश करते हैं।

'बाँसुरियां बज उठी' उपन्यास में जहाँ नारी शोषण दिखाया गया है वहां नारी इसे वेदना भरी परिस्थितियों में भी अधिकार प्राप्ति की कोशिश में लगी रहती है। गौरी जो सुजाता की माँ है अपने माँ–बाप की इच्छा के अनुसार शादी बंधन में बंध कर ससुराल चली जाती है। वहां पर पति तथा अन्य लोगों के क्रोध में दबी सी रहती है। यहाँ पर वह अपने ससुराल की इच्छा के विपरीत सुजाता को जन्म देती है तो सब के मन में क्रूर भाव उत्पन्न हो जाते हैं। अपने पति के द्वारा किये गए यौण शोषण का नतीजा यह निकलता है कि गौरी की कोख में पलने वाले बच्चे के लिए उसका पति (सुजाता का पिता) गौरी को ही जिम्मेदार ठहराता है।

''प्रत्येक स्त्री अपने आप में विशिष्ट स्त्री है। अपने जीवन जीने और होने के तरीके से ही वह अपना स्त्री होना स्थापित करती है। अतः स्त्रीत्व के नाम पर समाज उसके स्त्री होने के आचरण को अच्छा या बुरा कहने का अधिकार नहीं रखता और न ही पूर्व निर्धारित ढंग से किसी भी भूमिका को उस पर आरोपित कर सकता है।'' सुजाता की मॉ गौरी के साथ भी कुछ ऐसा घटता है।

गौरी का पति अपनी काम वासना के लिए गौरी से शारीरिक संबंध बनाता है तो उसकी गर्भवस्था में उसी को दोषी मानता है तो इस पर गौरी का अर्तमन दुःखी हो जाता है। सुजाता अपने पिता को कहते सुनती है, ''सारा तुम्हारा दोष है, जब तुम नहीं चाहती थी तो फिर यह सब हो ही क्यों?

''लेकिन में क्या करूँ मेरा क्या दोष? हां! आप कह सकते हैं। मेरी विवशता ही मेरा दोष है।''

''तो फिर रोओ, जी भरके रोओ। अपनी किस्मत की विवशता को और साथ ही मेरी भी।''

''क्या आपको दया नहीं आती! कुछ तो सोचो भगवान के लिए कोई उपाय सोचो। सुजाता अब सयानी हो गई है, वह क्या सोचेगी, दुनिया हँसेगी। मुझे यह वरदान नहीं चाहिए–– जीवन का बोझ नहीं चाहिए– नहीं चाहिए।'' वह अर्न्तमन से सिसक रही थी।

''किसने कहा था कि फँसो?'' एक असहय व्यंग्य था।

इस तरह सुजाता का पिता अपनी पत्नि को न केवल अपने शारीरिक संबंधों के लिए दोषी मानता है, बल्कि मानसिक तौर पर भी प्रताड़ित करता है। पर नारी का बदला आधुनिक रूप कितना भयंकर हो गया है। आज अबला का नहीं सबला का युग है। पुरूष के साथ कंधे

से कंधा लिाकर चलना यही गर्व है उसका। पर वह भूल चुकी है और अपनी भूल को फिर से सुधारना नहीं चाहती, यह उसका शायद अपमान होगा? शायद पुरूष भी उसके इस कृत्रिम स्वरूप का ही पुजारी है। उसे नौकरानी नहीं–शायद, शायद प्रेमिका–संगिनी चाहिए।

इन सब स्थितियों से गौरी बेखबर तो नहीं थी लेकिन उसको मिले संस्कार इस बात की इजाजत नहीं देते थे कि पति की इन यातनाओं को विरोध नहीं कर पाती।

नारी की सहनशीलता, मर्यादा और विवशता अपने ऊपर हुए अत्याचरों के विरूध आवाज उठाने से रोकने का काम करते हैं। केवल यौन शोषण नहीं समाजिक, राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र के अंतर्गत भी नारी का शोषण पुरूष जाति के द्वारा किया जाता है।

उपन्यास 'बाँसुरियां बज उठी' के अंदर आगे जाकर हम देखते हैं कि नुपुर जैसी भोली भाली लड़की नवल जैसे चतुर और दुष्ट लड़के के चंगुल में फंस जाती है। वह उसके साथ झूठी शादी रख कर उसको पैसा कमाने वाली मशीन बना देता है और धंधें मे उतार देता है।

सुजाता की सहेली नमिता की शादी होती है तो उसका पति शराब से धुत पैसे की लालसा से डूबा रहता है। वह उसके बच्चे की माँ बन जाती है लेकिन वह उससे सच्चा प्यार न पा सकी। जी चाहे उसे अपने बिस्तर पर रौंद कर चंद मिनटों में संतुष्टि पा कर नमिता को प्रताड़ित करना उसका नेम बन चुका था। इस प्रकार नमिता वैवाहिक जीवन में सुखी न थी।

नूपुर नवल की 'मीठी बातों' को प्यार समझ बैठी। उसको की गई प्रत्येक बात पर संवेदनशीलता। नुपुर जब भाग जाने की नवल की बात पर बेरोजगारी की विवशता की बात करती है तो चालाकी से वह उसके साथ शरीरिक संबंध बना लेता है। नुपुर के घबरा जाने पर वह उसे कहता है।

मेरे होते हुए डर क्यों? देखो! मैं अब तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। हमें कही जाना ही होगा। यदि तुम मुझे जीवित देखना चाहती हो तो।'' यह कह कर नवल ने नुपुर को अपनी बलिष्ठ बाहों में और कर कस लपेट लिया।

शरीर एक दूसरे के बहुत करीब आ गये और आपस में साँस टकराने लगे। शरीर के गरम कोमल स्पर्श ने सब कुछ भुला दिया। नूपुर का युवा मन इसी को स ब कुछ समय कर बस खो गया। नवल धीरे–धरे उसके शरीर को सहलाने लगा और बालों में अंगुलियां घूमने लगी। एक सुखद कल्पना का संसार बस गया। कल्पना की मस्ती के सामने वास्तविकता भला कब ठहर पाती। नूपुर ने उसके साथ भागने का प्रोग्राम बना लिया और एक दिन रात को चुपचाप सदा के लिए सुख से बिछुड़ कर चल दी न जाने किस और नवल बहला फुसला कर नूपुर को बम्बई ले गया। वहाँ उसने नूपुर को सहारा देने की बजाय उसको मात्र भोग विलास की वस्तु बना कर रख दिया और उसको चन्द पैसो और अैशो आराम के लिए दूसरे मर्दो के हवाले कर दिया। वह राज उसकी देह का व्यपार करके पैसे कमाता और शराब पीता।

नूपुर जब बम्बई आई थी अपने को प्यार के पवित्र संसार में खोया न पाकर नरक की दुर्गन्ध में खोया पाती थी जो असहय थी। चारों तरफ विलासिता और उसी की गंध .... मानो संसार में दूसरा भाव ही न हो। चारों तरफ उसके लोभी भंवरे मानवों को मंडराता देखती। घबराती सिकुड़ जाती सहम जाती ..... अपने अंग सिमेट लेती पर जब याचना से युक्त रक्षा की प्रार्थना अपने रक्षक से करती तो नवल पाशर्विक ..... हँसी हँस देता ..... आनन्द विभोर हो जाता। यही तो जीवन का सच्चा सुख था उसके अनुसार।

नूपुर के संस्कार ऐसे थे कि वह इस वैश्यावृति की स्थिति को अपनाने से इन्कार करती है और कभी भी उसका मन किसी अबला की तरह हताश होने की बजाय इस दलदल से निकलने के प्रयास में लगा रहता। वह जीवन के इस मोड़ पर खड़ी थी जिस पर वह अपने पति नवल को छोड़ कर वापस आने में अपने आप को योग्य नहीं मानती क्योंकि जो मर्यादा लांघ कर अपने घर परिवार और समाज से आई थी वे किसी भी हद पर उसे वापस नहीं अपनाएँगे।

इन्दुबाली ने नूपुर की मानसिक स्थिति को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है जिसमें नारी का यौन शोषण और इसके प्रति विद्रोह भाव को दिखाया गया है। वह देखती है कि नारी संघर्ष की दास्तान उत्तरवैदिक काल से चलती आई है। वैज्ञानिक युग में पहुँचते पहुँचते काफी सारे अधिकार नारी प्राप्त कर चुकी है फिर भी उसका समाज के अन्दर शोषण देखने को मिलता रहता है। यौन शोषण की बात करें तो घर से शुरू होता है। घरों में पुरूष पत्नी, बहन और पुत्री तक के साथ यौन शोषण करने के मामले सामने आ चुके हैं तो यहां मर्यादा की बात किस कदर पुरूष जाति अपने जुर्मो को छिपाने के लिये एक मखौटे की तरह करते हैं।

उपन्यास में हम देखते हैं कि सुजाता जब कालेज और यूनिवर्सिटी की पढ़ाई तक पहुंचती है तो उसका पिता गौरी के मरने के बाद नई दुल्हन ले आता है। वह अपनी जवान बेटी का ख्याल भी नहीं करता और अपने बेटे राजीव को होस्टल भेज देता है परन्तु सुजाता आशावादी दृष्टिकोण वाली लड़की है जो अपने जीवन की इन परिस्थितियों में भी भविष्य के प्रति आशावादी बनी रहती है। उधर नूपुर सुजाता को खत लिखती है जिसमें वह अपनी गलती कबूल करती हुई पश्चाताप करती है। वह अपने अतीत की ओर वापस मुड़ना चाहती है और आखिरकार अपने मकसद में कामयाब भी हो जाती है। वह नवल के चंगुल से भाग जाती है।

निष्कर्ष

नारी–पुरूष भेद को मिटाने की कोशिश में अधिनियम तो बने, साथ ही संतो–महापुरूषों और आंदोलनकारियों ने भी नारी–सुधार के लिए साकारात्मक टिप्पिणयाँ दीं। डॉ. इन्दुबाली और अन्य नारी लेखकों ने नारी सुधार के लिए अपना घनिष्ठ साहित्यक योगदान दिया। इन्दुबाली जी का उपन्यास 'बाँसुरियां बज उठी' नारी के यौन शोषण पर लेखिका की भावात्मक अभिव्यक्ति है। इसमें नूपुर और सुजाता जैसी नारी पात्रों को यौन शोषण के विरूद्ध साकारात्मक प्रतिक्रिया करती हुई

दिखाया गया है। ये नारी पात्र (सुजाता, नूपुर)यौन शोषण के विरूद्ध अधिकार प्राप्त करते हैं। इस तरह इन्दुबाली अपने उपन्यास में यौन शोषण जैसे विषय को लेकर पूर्ण रूप से सफल रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *इन्दुबाली–'बांसुरिया बज उठी', दिल्ली, आधुनिक साहित्य सदन, सं. 1967,पृ. 9–10*
2. *इन्दुबाली–'बांसुरिया बज उठी', दिल्ली, आधुनिक साहित्य सदन, सं. 1967, पृष्ठ 40*
3. *इन्दुबाली–'बांसुरिया बज उठी', दिल्ली, आधुनिक साहित्य सदन, सं. 1967, पृ. 41–42*
4. *प्रभा खैतान–'उपनिवेश में स्त्री' पृ. 130*
5. *तुलसी दास –'सुंदरकांड (रामचरित मानस)*
6. *कबीर–'दोहा'*